आयुर्वेदिक मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन के कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का भाषण

दिनांक 28 सितंबर 2023, गुरुवार	समय : 6:00 PM	स्थान : आयुर्वेदिक कॉलेज, जालुकबाड़ी

- असम के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के माननीय मंत्री श्री केशव महंत जी,
- पश्चिम गुवाहाटी से विधायक एवं सरकारी आयुर्वेदिक कॉलेज की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन श्री रमेंद्र नारायण कलिता जी,
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की संयुक्त सचिव एवं आयुष की निदेशक डॉ. इंद्रानोशी दास जी,
- ए.एम.ओ. के महासचिव डॉ. बिष्णु चौधरी जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- संगठन के सम्मानित सदस्यों,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- आयुर्वेदिक कॉलेज के विद्यार्थियों
- देवियों और सज्जनों

नमस्कार !

सर्वप्रथम आयुर्वेदिक मेडिकल ओर्गेनाइजेशन (एएमओ) की पूरी टीम को संगठन के दो वर्षों का सफर सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए बधाई। संगठन ने इन दो वर्षों में आयुर्वेदिक चिकित्सा क्षेत्र में स्वास्थ्य जागरूकता और निःशुल्क परामर्श शिविरों के माध्यम से समाज में विशिष्ट पहचान बनाई है।

यह संगठन भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के जरिए समाज कल्याण एवं स्वास्थ्य सेवा में जुटा हुआ है। जनमानस के विकास के लिए संगठन आयुर्वेद को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है। आज के इस कायर्क्रम का मुख्य उद्देश्य भी यही है और यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस शुभ कार्य का हिस्सा बनने का मौका मिला। मैं इसके लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा संगठन की टीम और डॉ. बी. बरुवा कैंसर इंस्टीट्यूट के प्रबंधकों को धन्यवाद देता हूं।

मित्रों,

आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थ्य की पुरातन भारतीय पद्धति है। आयुर्वेद हमें हजारों वर्षों से स्वस्थ जीवन का मार्ग दिखा रहा है। यह हमारी आधुनिक जीवन शैली को सही दिशा देने और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी आदतें विकसित करने में सहायक होती है।

आयुर्वेद जीवन का समग्र विज्ञान है, इस विज्ञान का मुख्य उद्देश्य **"स्वस्थस्य स्वस्थ रक्षणम्"** है, जिसका अर्थ स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और बनाए रखना है। आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा बीमारी को विकसित होने से पहले ही रोकने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

आयुर्वेदिक विज्ञान केवल चिकित्सा का एक पारंपरिक रूप नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य देखभाल की एक बारहमासी प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली है। समय की कसौटी के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान और उपचार के बावजूद इस महत्व आज भी कम नहीं हुआ है।

लोगों का आयुर्वेद चिकित्सा पर विश्वास आज भी बरकरार है। विशेषकर कोरोना के महा विपदा काल में आयुर्वेद ने अपनी महत्त साबित की है। कोरोना काल में लोगों में आयुर्वेद के प्रति एक नया विश्वास जगा है। इसी विश्वास और लोगों में बढ़ती जागरूकता के कारण आयुर्वेदिक बाजार जबरदस्त विकास के दौर से गुजर रहा है।

वतर्मान आधुनिक जीवन में अच्छे स्वास्थ्य के लिए बीमिरियों की रोकथाम जरूरी है। लेकिन हम रोकथाम का उपाय करने के बजाय इलाज पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कैंसर के इलाज के लिए उपचार आवश्यक है, लेकिन अभी तक ऐसा कोई प्रभावी इलाज नहीं मिला है, रोगी के जीवनकाल को बढ़ा सके। इसलिए, जब तक कैंसर का कोई प्रभावी खोजी इलाज नहीं मिल जाता, जितना संभव हो सके इस बीमारी से बचाव करना ही बेहतर है।

इस कार्य में आयुर्वेद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आयुर्वेद सिर्फ इलाज तक सीमित नहीं है। इसमें स्वस्थ और लंबे समय तक जीने के विज्ञान का बहुत सुंदर वर्णन किया गया है। आयुर्वेद उपचार और इलाज से भी बढ़कर है। आयुर्वेद में उपचार के अलावा सामाजिक स्वास्थ्य, मानसिक, प्रसन्नता, पर्यावरणीय स्वास्थ्य, सहानुभूति, करुणा और उत्पादकता शामिल हैं।

देवियों और सज्जनों,

आयुर्वेद चिकित्सा का बढ़ावा देने के लए भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। आयुर्वेद चिकित्सा के जरिए स्वास्थ्य सेवा के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय आयुष मिशन, आयुर्वस्वास्थ योजना, आहार क्रांति मिशन जैसी योजनाएं लागू की हैं। इसके अलावा आयुर्वेद के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान के लिए स्मार्ट (स्कॉप फॉर मेनसेट्रीमिंग आयुर्वेद रिसर्च इन टीचिंग) कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

सरकार ने चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने की पहल करते हुए वीजा को एक खास श्रेणी **"आयुष वीजा"** पेश किया है। यह वीजा ऐसे विदेशियों के लिए शुरू किया गया है, जो भारत आकर यहां के पारंपरिक तरीकों से अपना इलाज कराना चाहते हैं। इस योजना का उद्देश्य विदेशी नागरिकों को भारत में आयुष चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवाएं और योग के प्रति आकर्षित करना है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की पहल से गुजरात के जामनगर में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का पहला **ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन (जीसीटीएम)** स्थापित किया गया है, जो देश के लिए गर्व की बात है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे आयुर्वेद चिकित्सा को देश में ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर भी बढ़ावा मिलेगा।

आयुर्वेद हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता है। यह कई गंभीर बीमारियों से लड़ने की ताकत प्रदान करता है। आयुर्वेद से कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।

कैंसर वैश्विक स्तर पर मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। कैंसर को एक घातक और जटिल बीमारी माना जाता है। आयुर्वेद में कैंसर का उपचार और प्रतिरक्षा में सुधार के माध्यम से रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने पर काम करता है।

वैश्विक स्तर पर कैंसर का बोझ बढ़ता जा रहा है। इससे व्यक्तियों, परिवारों, समुदायों और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों पर भी भारी शारीरिक, भावनात्मक और वित्तीय दबाव पड़ रहा है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में भी धूम्रपान और तम्बाकू के सेवन के कारण लोग कैंसर का शिकार बन रहे हैं। आसान प्रक्रियाओं और विकल्पों से कैंसर के कारकों से बचा जा सकता है। जब रोकथाम की बात आती है तो आयुर्वेद एक बेहतर विकल्प साबित हुआ है।

हमें कैंसर मुक्त समाज के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने और इसे प्रोत्साहित करने की जरूरत है। आयुर्वेद उपचार की मदद से कैंसर के दुष्प्रभावओं और इससे जुड़ी जटीलताओं को कम करने में मदद करती है। अब कैंसर से निपटने के लिए आयुर्वेदिक उपचारों के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना और जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डॉ. बी बरुवा कैंसर संस्थान कैंसर की रोकथाम और सर्वोत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने का सराहनीय कार्य कर रहा है। राज्य सरकार भी जरूरतमंद लोगों को सस्ती स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश में आयुष भी बहुत अच्छी प्रगति कर रहा है।

मुझे खुशी है कि एएमओ "जनसंदेश", "जनभागीदारी", और "जनआंदोलन" के सिद्धांत के साथ सतत चिकित्सा शिक्षा और कार्यशालाओं एवं सेमिनारों के माध्यम से आयुर्वेद के गुणों का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एएमओ समय-समय पर विभिन्न सरकारी स्तरों पर महत्वपूर्ण सुझावों के माध्यम से आयुर्वेद के समग्र विकास में सरकार की मदद करता है। यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि एएमओ की टीम ने असम में पिछले साल आई बाढ़ के समय में बाढ़ राहत शिविरों की एक श्रृंखला का आयोजन कर पीड़ितों की मदद की थी।

मेरी शुभकामना है कि एएमओ इसी तरह आयुर्वेद के प्रचार और प्रसार के लिए और स्वास्थ्य क्षेत्र में राज्य के समग्र विकास के लिए कुशलता, क्षमता और समर्पण के साथ काम करता रहे ताकि रोगमुक्त और स्वस्थ भारत का निर्माण हो सके।

अंत में, मैं कार्यक्रम की सफलता के लिए आयोजकों को शुभकानाएं देता हूं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत।

इसी कामना के साथ मैं अपने शब्दों को विराम देता हूं।

धन्यवाद !

जय आयुर्वेद !

जय हिन्द !